Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी साहित्य में कृत्रिम मेधा की भूमिका

भागवत पस्तापूरे*
इंदिरा गांधी वरिष्ठ महाविद्यालय सिडको नांदेड़

शोध सार

आज का समय साइंस और टेक्नोलॉजी का है। जैसे रेडियो, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और इंटरनेट का साहित्य पर बहुत बड़ा असर है, उसी प्रकार आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी हिंदी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसी टेक्नोलॉजी है जिसमें मशीनें इंसानी दिमाग की तरह समझने, सोचने, एनालाइज़ करने और स्ट्रक्चरल काम करने की क्षमता रखती हैं। हिंदी साहित्य के सृजन, अध्ययन, प्रचार-प्रसार और संरक्षण—इन सभी क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है।

बीज शब्द: *कृत्रिम बुद्धिमत्ता , तकनीक, हिंदी भाषा, ज्ञान, प्रसार*

Received: 02/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
भागवत पस्तापूरे
Email: pastapurebhagwat@gmail.com

साहित्य सृजन में कृत्रिम मेधा

आज कृत्रिम मेधा आधारित कविता, कहानी, निबंध, नाटक और उपन्यासों की रूपरेखा तैयार करने में अच्छी मदद करते हैं। लेखक कृत्रिम मेधा से विषय सुझाव, कथानक विकास, संवाद निर्माण और भाषा सुधार में सहायता ले रहे हैं।नए लेखकों को भाषा की शुद्धता, व्याकरण और शैली सीखने में कृत्रिम मेधा मददगार सिद्ध हो रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से हम कंपोज़िशन तो बना सकते हैं, लेकिन उसे इंसानी सेंसरी एक्सपीरियंस और इमोशन की गहराई नहीं दे सकते। इसलिए, हमारे सामने ऑप्शन यह है कि हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को राइटर के असिस्टेंट के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हैं।

हिंदी भाषा के अध्ययन और शोध में भूमिका

हिंदी साहित्य के अध्ययन और शोध में कृत्रिम मेधा ने नए आयाम जोड़े हैं।उदाहरण के रूप में, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से हिंदी भाषा का अध्ययन अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। इसके माध्यम से हिंदी की शब्दावली और भाषा-शैली का डिजिटल रूप में संकलन तथा विश्लेषण संभव है। कोई भी शोधकर्ता, जिसके पास किसी विषय से संबंधित कुछ पृष्ठ उपलब्ध हों, उन्हें संक्षेप में प्रस्तुत कर उपयोग कर सकता है। साथ ही, विभिन्न कालखंडों से जुड़े साहित्य—जैसे भक्तिकाल, रीतिकाल आदि—का अध्ययन भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से किया जा सकता है, जिससे साहित्य का तुलनात्मक और अनुभवात्मक अध्ययन संभव होता है।

अनुवाद के क्षेत्र में योगदान

हिंदी साहित्य को ग्लोबल लेवल पर नई पहचान दिलाने वाले ट्रांसलेशन को बहुत ज़रूरी माना जाता है। साथ ही, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से ट्रांसलेशन टेक्नीक का इस्तेमाल मीडिया के ज़रिए किया जाता है। इसके ज़रिए हिंदी साहित्य का इंग्लिश और दूसरी विदेशी भाषाओं में ट्रांसलेशन किया जाता है। साथ ही, दुनिया की अलग-अलग भाषाओं में लिखी बेहतरीन रचनाएँ, मशहूर किताबें हैं। उनका भी हिंदी में ट्रांसलेशन हो रहा है। लेकिन मशीनों से किए गए ट्रांसलेशन सीधे-सीधे ट्रांसलेशन नहीं हो सकते। फिर भी, यह सारा साहित्य ग्लोबलाइज़ेशन की तरफ़ मज़बूती से बढ़ रहा है।

साहित्य संरक्षण और डिजिटल अभिलेखागार

किसी भी भाषा के लिखित, मौखिक और हाथ से लिखे साहित्य को बचाना, अगली पीढ़ी के लिए बहुत ज़रूरी है। हम इस माध्यम से यह कर सकते हैं।हिंदी साहित्य की अनेक दुर्लभ पांडुलिपियाँ ,कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज़ और शोध- ग्रंथ समय के साथ अप्रचलित हो रहे

थे। डिजिटाइजेशनकी मदद से पाठ पहचान (OCR) और डेटा को सुरक्षित रखना संभव हो गया है।।पुरानी पांडुलिपियों को डिजिटल रूप में सुरक्षित कर अगली पीढ़ी तक पहुँचाया जा रहा है।भविष्य में, डिजिटल अभिलेखागार हिंदी साहित्य के संरक्षण, प्रचार और प्रसार का सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है। "ओपन एक्सेस पोर्टल दुनिया भर में दुर्लभ पांडूलिपी देखने का लोकतांत्रिकरण करते है वॉटरमार्किंग डाउनलोड सक्षम करते है बौद्धिक संपदा का सुरक्षा करता है।" 1

पाठक और साहित्य के बीच सेतु

आज पाठकों और साहित्य के बीच एक मज़बूत कनेक्शन बनाने की ज़रूरत उतनी असरदार नहीं दिखती, इसलिए पाठकों और साहित्य के बीच एक ब्रिज बनाना ज़रूरी है। आज के डिजिटल ज़माने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस रीडर्स के लिए एक सेतु का काम कर रहा है। पाठकों की जिन साहित्य में सबसे ज़्यादा दिलचस्पी है, उन पर साहित्य बनाया जा रहा है। साथ ही, उस साहित्य को ऑडियो ई-बुक्स और वॉइस असिस्टेंट्स के ज़रिए पाठकों और खासकर युवा पीढ़ी जो डिजिटल मीडिया के ज़रिए ज़्यादा जुड़ रही है और साहित्य की तरफ़ आकर्षित हो रही है।

हिंदी साहित्य में कृत्रिम मेधा की चुनौतियाँ और सीमाएँ

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अनेक सुविधाएँ और संभावनाएँ उत्पन्न करके वैश्विक दरवाजे खुले हैं। किंतु इसके साथ-साथ कुछ गंभीर चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। इनका विवेचन आवश्यक है, ताकि कृत्रिम मेधा का उपयोग साहित्य के हित में संतुलित रूप से किया जा सके।

मानवीय संवेदना का अभाव

साहित्य मूलतः मानवीय भाव- भावनाओं, अनुभवों और सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है। कृत्रिम मेधा साहित्य में नौ स्वाद उदा: भाव, पीड़ा, प्रेम, करुणा या संघर्ष को अनुभव नहीं करता, केवल प्राप्त जानकारी के आधार पर भाषा का निर्माण करता है।इसलिए कृत्रिम मेधा द्वारा रचित साहित्य में भावनात्मक गहराई और आत्मीयता का स्पष्ट रूप से अभाव दिखाई देता है।

मौलिकता पर प्रश्न

कृत्रिम मेधा पूर्व में उपलब्ध साहित्यिक सामग्री के आधार पर ही रचनाएँ करता है।इससे सृजनसाहित्य नई कल्पना और मौलिक विचारों की कमी हो सकती है।कई बार कृत्रिम मेधा द्वारा तैयार सामग्री अक्सर यह जानकारी पिछले साहित्य से इतनी मिलती-जुलती होती है कि यह अंदाज़ा लगाना बहुत मुश्किल हो जाता है कि कौन सा साहित्य नया है।

साहित्यिक चौर्य (Plagiarism) की संभावना

कृत्रिम मेधा द्वारा तैयार रचनाओं में अनजाने में साहित्य चौर्य की आशंका रहती है।डिजिटल युग में साहित्यिक चौर्य की संभावना ज़्यादा है, लेकिन जागरूकता और नैतिक विचारों के ज़रिए हमारे पास मौजूद टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके इसे रोका जा सकता है।मौलिकता ही साहित्य की आत्मा है। और इसे बचाना हर साहित्यिक की ज़िम्मेदारी समझनी चाहिए, तभी चौर्य नहीं होगा। चूँकि कृत्रिम मेधा विशाल डेटा से सीखता है, इसलिए किसी लेखक की शैली या पंक्तियाँ समान रूप में प्रकट होती हैं।यह लेखकों के बौद्धिक अधिकारों के लिए साहित्य की गुणवत्ता और सृजनात्मकता प्रभावित होती है।

भाषा और सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं की सीमित समझ

हिंदी भाषा में मुहावरे, लोकोक्तियाँ, प्रतीक और सांस्कृतिक संदर्भ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लोक भाषा बोलियां और क्षेत्रीय प्रयोग साहित्य को विशेष अर्थकी गहराइयों को प्रदान करते हैं। भाषा में अर्थ केवल शब्द से नहीं बल्किसंदर्भ या भाव-भावनातत्कालीन परिस्थितियों के ऊपरबनती है। कृत्रिम मेधा कई बार इन सूक्ष्म सामाजिक सांस्कृतिक अर्थों को सही ढंग से समझ नहीं पाता।क्षेत्रीय बोलियों, लोक साहित्य और परंपराओं को प्रस्तुत करने में समझने में पूरी तरह विफल रहती है।

साहित्यिक मूल्यांकन में कठिनाई

इसमें लेखक की निजी सोच और उस समय के मूल्यों को ध्यान में रखा जाता है और इंसानी ज़मीर के आधार पर साहित्य की रचना की जाती है। सौंदर्यबोध, रस, ध्वनि,व्यंजना और भाव—इनका आकलन मानवीय विवेक से होता है। चेतना और 'स्व' का अभाव हैI आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक असिस्टेंट सिस्टम है, एनालिटिकल या क्रिटिकल सिस्टम नहीं।कृत्रिम मेधा इन तत्वों का समग्र और न्यायपूर्ण मूल्यांकन करने में अभी सक्षम नहीं है।

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

रचनाकारों पर निर्भरता बढ़ने का खतरा

यदि लेखक अत्यधिक रूप से कृत्रिम मेधा पर निर्भर हो जाएँ, तो उनकी स्वयं की रचनात्मक क्षमता कमजोर पड़ सकती हैइसमें कोई चेतना नहीं है।लेखन एक यांत्रिक प्रक्रिया बनकर रह सकती है, जिससे साहित्य की आत्मा उलझी हुई है। "आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स भावनाओं से रहित होकर काम करता है एक ऐसी विशेषता जिसमे फायदे और नुकसान दोनो होते है।2

नैतिक और वैचारिक चुनौतियाँ

कृत्रिम मेधा का उपयोग बिना उचित दिशा-निर्देशों के किया गया, तो साहित्य में पक्षपात, गलत सूचना या सतही विचारों का प्रसार हो सकता है।साहित्य की सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी प्रभावित हो सकती है।हिंदी साहित्य में कृत्रिम मेधा उपयोगी साधन अवश्य है, परंतु इसकी सीमाओं को समझना और स्वीकार करना आवश्यक है। कृत्रिम मेधा को साहित्यकार का सहायक माना जाए, न कि विकल्प। मानवीय संवेदना, भावना, अनुभूति, इच्छा,कल्पनाशीलता और अनुभव के बिना साहित्य अधूरा है। इसलिए संतुलन, विवेक और नैतिकता के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ प्रयोग करना हिंदी साहित्य के लिए बहुत फायदेमंद साबित हो सकता है। हिंदी भाषा कृत्रिम मेधा के साथ जुड़कर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकती है इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है और कुछ बहुत कुछ शेष है।3

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः हिंदी भाषा कृत्रिम मेधा के साथ जुड़कर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकती है इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है और कुछ बहुत कुछ शेष है। यह साहित्य सृजन, अध्ययन, अनुवाद, संरक्षण और प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। किंतु साहित्य की आत्मा मानवीय संवेदना, अनुभव और कल्पना में निहित है, जिसे केवल मानव ही पूर्ण रूप से अभिव्यक्त कर सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि इससे इंसानी गलती कम होती है और मिलने वाले नतीजे ज़्यादा सटीक होते हैं।अतः कृत्रिम मेधा और मानव रचनाकार के सहयोग से भविष्य में हिंदी साहित्य को और समृद्ध, व्यापक और ग्लोबल बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को बदलना ज़रूरी है ताकि जब तक यह एक मशीन न बन जाए, तब तक इसमें इंसानी भावनाओं पर ध्यान न दिया जाए।

संदर्भ:

1.हिंदी भाषा और आर्टिफिशल इंटेलिजेंस- नमिता मिश्रा शुभम पब्लिकेशन कानपूर पृष्ठ क्रमांक 237

2. आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स एक अध्ययन डॉ. सुनील कुमार शर्मा, वाणी प्रकाशन .पृष्ठ क्रमांक 109

3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका (हिंदी भाषा के संदर्भ मे) - डॉ. अनिता प्रजापत शोध पत्र

4. कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तकनीक , उपयोग और चुनौतियां-गिरीश वालकर

5. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस -डॉ. सुनील कुमार शर्मा ,वाणी प्रकाशन